International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा (नईतालीम) की अवधारणा और एनईपी 2020– एक व्यापक समीक्षा

डॉ सरिता गोस्वामी
प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ एजुकेशन, आई आई एम टी यूनिवर्सिटी, मेरठ
drsaritagoswami601@gmail.com

सार

20वी सदी की शुरु आत में प्रस्तावित महात्मा गांधी के बुनियादी शिक्षा (नईतालीम) के दर्शन ने शिक्षा के लिए एक एकीकृत समग्रदृष्टि, कोण जिसमें व्यावहारिक शिक्षा नैतिक विकास और सामुदायिक जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित किया, दूसरी ओर राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020,–21वीं सदी की जरूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाने और परिवर्तित करने के लिए भारत के दृष्टिकोण का प्रति निधित्व करती है जिसमें समावेशिता आलोचनात्मक सोच और प्रौद्योगिकी के एकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया है महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति एनईपी 2020 समग्र विकास और व्यक्ति के सशक्तीकरण की एक समानदृष्टि साझा करते हैं। गांधी की बुनियादी शिक्षा (नईतालीम) की अवधारणा और एनईपी 2020 यद्यपि बहुत अलग–अलग संदर्भों में विकसित की गई हैं लेकिन इनका उद्देश्य भारत में शिक्षा प्रणाली में क्रांतिलाना इस संदर्भ में यह शोधपतर्क करता है कि नई तालीमया वर्धा योजना सशक्त भारतीय समाज के लिए एक रोड मै पहोसकता है। आज का भारत एक प्रमुख चुनौती का सामना कर रहा है कि क्या हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली एक सतत समाज बनाने में सक्षमहै। क्या यह युवापीढ़ी को एक जिम्मेदार और सचेत नागरिक बनने के लिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करती है? यह शोध पत्र शैक्षिक पाठ्यक्रम और शिक्षा शास्त्र के संदर्भ में बुनियादी शिक्षा के सिद्धांतों का विश्लेषण और इसकी भूमिका की जांच करेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षण दृष्टि कोण में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जिसका लक्ष्य प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक के शैक्षिक प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना है। यह दोनों की समीक्षा नई तालीम, लिंग समानता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सामाजिक असमानता, स्थायी लक्ष्य, स्थायी समाज, वर्धायोजना की समानताओं, अंतरों और संभावितताल मेल पर प्रकाश डालती है।

संकेतबिंदु–लिंग समानता, नईतालीम, गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा, सामाजिक असमानता, स्थायीलक्ष्य, स्थायी समाज, वर्धायोजना, एनईपी 2021

1 प्रस्तावना– गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा सामाजिक विकास का एक स्रोत है जो सामाजिक असमानता को कम करता है। यह लिंग समानता बनाए रखने का एक साधन है। शिक्षा सहिष्णुता को प्रोत्साहित करती है और एक अधिक टिकाऊ समाजका विकास करने में योगदान देती है। यह लोगों को ज्ञान, कौशल और आत्मनिर्भरता के साथ सशक्त बनाती है, जो उद्यमिता और व्यक्ति के समग्रविकास के लिए विभिन्न आयाम खोलती है। यह लोगों की आवाज को मजबूत बनाती है जिससे एक राष्ट्र की उत्पादकता और प्रति स्पर्धात्मकता बढ़ती है, जो सामाजिक और राजनीतिक प्रगतिका एक उपकरण है। महात्मा गांधी का गुणात्मक शिक्षा का दृष्टिकोण बुनियादी कौशल और मानव व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है, जिसमें शारीरिक, सामाजिक, नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास, यानी गुणवत्ता शिक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक शामिल हैं। इसे विभिन्ननामों से जाना जाता है–बुनियादी शिक्षा, मूलभूत शिक्षा। इसे नई तालीम के नाम से भी जाना जाता है, जो महात्मागांधी द्वारा कल्पित शैक्षिक प्रथाओं का आधारथी। इसे 1937 में वार्धा में प्रस्तुत किया गया और बाद में इसे वार्धाके नाम से जाना जाने लगा। वर्धा योजना या बेसिक नेशनल एजुकेशन। यह उन गुणों के विकास पर केंद्रित है जो एक अहिंसक सतत समाजका

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

निर्माण करने के लिए आवश्यक हैं। विचार शोषण और केंद्रीकरण के खिलाफ था। भारत एजेंडा 2030 में व्यक्त किए गए सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए यह सुनिश्चित करते हुए प्रतिबद्ध है कि गुणवत्ता शिक्षा एक लक्ष्य है जिसे भारत प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है।

2–**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** (एनईपी 2020– एनईपी 2020 समग्र विकास, मूल्य आधारित शिक्षा और सामाजिक योगदान पर जोर देता है।यह शोध पत्र महात्मा गांधी की शैक्षणिक दृष्टि के परिप्रेक्ष्य से(एनईपी 2020 की एक व्यापक समीक्षा है, जो इस के गांधीवादी सिद्धांतों –समग्र विकास, नैतिक चरित्र और सामुदायिक भागीदारी के साथ संरेखण को उजागर करती है।यह तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से (एनईपी 2020, और गांधी के विचारों के बीच समानता का पता लगाता है, जो स्वदेशी ज्ञान, व्यावसायिक शिक्षा और विकेंद्री करण पर उनके साझा जोर को उजागर करता है। गांधीवादी दर्शन को समकालीन शैक्षणिक सुधारों के साथ एकीकृत करके (एनईपी 2020 स्पष्ट करता है किताकतवर व्यक्तियों का निर्माण किया जाए जो नैतिक समावेशी और स्थायी राष्ट्र–निर्माण के प्रतिप्रति बद्ध हैं। दोनों ने भारत में शिक्षा के विकास को प्रभावित किया है। भारत सरकार ने 29 जुलाई 2020 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को राष्ट्रीय नीति पर शिक्षा 1986 के स्थान पर मंजूरी दी। एनईपी 2020 ने देशव्यापी चर्चा के बाद वर्तमान रूप तैयार किया। एनईपी 2020 का वर्तमान स्वरूप देशभर की संवेदनाओं और बैठकों के बाद तैयार हुआ। एनईपी 2020 का प्राथमिक उद्देश्य प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक व्यावसायिक अध्ययन सहित, एक व्यापक ढांचे पर जोर देना है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में यह नई शिक्षा नीति पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों को मौलिक कर्तव्यों और संवैधानिक मूल्यों के प्रतिग हरे सम्मान, अपने देश के साथ संबंध और बदलती दुनिया में अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता विकसित करने के लिए मूलभूत रूप से परिवर्तन करने की उम्मीद करती है डभ्त्क,2020 पृष्ठ 6।' शिक्षा पूर्णमानव क्षमता प्राप्त करने के लिए आधार है,एक समान और न्याय पूर्ण समाज विकसित करने के द्वारा और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के द्वारा (डभ्त्क, 2020, पृष्ठ 3)। महात्मागांधी ने सही कहा, शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चे और मनुष्य के सर्वांगीण विकास से है, शरीर, मन और आत्मा। साक्षरता शिक्षाका अंत नहीं है नही यह शुरुआत है।यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरुष और महिला शिक्षित हो सकते हैं– (गांधी। यद्यपि आधुनिक शिक्षा प्रणाली के परिचय के साथ कई पारंपरिक शिक्षण–सीखने की प्रणालियाँ खो गईं। ब्रिटिश द्वारा पेश किया गया भारतीय शिक्षा का आधुनिक पाठ्यक्रम विभिन्न नौकरी रिक्तियों में तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरा करता था।

3 **महात्मागांधी की बुनियादी शिक्षा** –(नई तालीम) की अवधारणाः महात्मागांधी की शिक्षा की दृष्टि बौद्धिक और नैतिक दोनों रूप से बच्चे के सर्वांगीण, एकीकृत विकास के विचार पर आधारित थी। शिक्षा का उनका मॉडल, जिसे नई तालीमया बुनियादी शिक्षा के रूप में जाना जाता हैं

3,1 बुनियादी शिक्षा निम्नलिखित प्रमुख सिद्धांतों पर केंद्रित था –

- **करके सीखना**–गांधी ने इस बात पर जोर दिया किसी खना एक व्यावहारिक अनुभव होना चाहिए। शिक्षा को पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए, बल्कि इसमें वास्तविक दुनिया के कार्य शारीरिक श्रम भी शामिल होने चाहिए।
- **व्यावसायिकऔर उत्पादककौशल**– गांधीजी का मानना था कि शिक्षा को समाज की आवश्यकताओं से जोड़ा जाना चाहिए और व्यावसायिक कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।उन्होंने प्रस्तावदिया कि बच्चों को अकादमिक ज्ञान के साथ–साथ बढ़ई गीरी, कताई, बुनाई और कृषि जैसे उत्पादक कौशल सीखने चाहिए। शैक्षणिक विचार में गांधी जी के सबसे उल्लेखनीय योगदानों में से एक पाठ्यक्रम में व्यावसायिक प्रशिक्षण के एकी करण पर उनका

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

प्रोत्साहन था।उनका मानना था किप्रत्येक बच्चे को शैक्षणिक विषयों के साथ–साथ बुनाई, बढ़ईगीरीया खेती जैसे उपयोगी कौशलया शिल्प सीखना चाहिए। गांधी के लिए व्यावसायिक शिक्षा पूरक नहीं थी, बल्कि आत्मनिर्भर व्यक्तियों को विकसित करने के लिए केंद्रीय थी, जो समाज में सार्थक योगदान दे सकें।

- **मातृ भाषा शिक्षण का माध्यम–** उन्होंने शिक्षण के लिए मातृभाषा के उपयोग के महत्व पर जोर दिया क्योंकि यह अद्यतन सामग्री के साथ समझ और जुड़ाव को बढ़ाता है।गांधी ने विशेष रूप से स्कूली शिक्षा के प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग की वकालतकी। उनका मानना था कि शिक्षा बच्चे के तात्कालिक वातावरण और सांस्कृतिक संदर्भ में निहित होनी चाहिए और अपनी भाषा में सीखने से समझ और रचनात्मकता दोनों में वृद्धि होगी। इससे व्यक्ति की संस्कृति और विरासत से गहरा जुड़ाव होगा।
- **समग्रविकास–** गांधी के शिक्षा मॉडल ने चरित्र निर्माण, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी के विकास की भावना विकसित करने के लिए बच्चे के शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास पर जोर दिया। शिक्षा के प्रति गांधीका दृष्टिकोण समग्र विकास के विचार में गहराई से निहित था, जो व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास पर ध्यान केंद्रित करता था। उनकी नई तालीम ने सीखने की प्रक्रिया में मन और शरीर दोनों को एकीकृत करने का प्रयास किया। उनका मानना था कि शिक्षा को अकादमिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए, बल्कि इस मेंनै तिक और शारीरिक कार्य शामिल होने चाहिए, जिससे ऐसे व्यक्ति तैयार हों जो बौद्धिक रूप से सक्षम और सामाजिक रूप से जिम्मेदा रहों।
- **आत्म निर्भरताऔर सामुदायिक जुड़ाव–** उनका दर्शन आत्मनिर्भर व्यक्तियों का निर्माण करना चाहता था जो अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों सामुदायिक भागीदारी और सामाजिक सेवा के प्रति सचेत हों, जिससे स्थानीय मुद्दों की समझ को बढ़ावा मिलता था।
- **सार्व भौमिक शिक्षा–**गांधी सभी के लिए विशेषकर, आर्थिक रूप से वंचित और महिलाओं सहित समाज के हाशिए पर पड़ेवर्गों के लिए शिक्षा की पहुंच में विश्वास करते थेद्य
- 3ण्2–**महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा का सिद्धांत** –महात्मागांधी का बुनियादी शिक्षाका सिद्धांत भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उपनिवेशी शिक्षा प्रणाली के प्रति क्रिया के रूप में उभरा। उनकी दृष्टि ऐसी शिक्षा प्रणाली बनाने की थी, जोव्यक्तिकेसमग्रविकासकोध्यानमेंरखे,व्यावहारिककौशल, चरित्र निर्माण और सामुदायिक भागीदारी के विकास पर जोर दे।
- **दर्शनऔरउद्देश्य–** गांधी की बुनियादी शिक्षाका उद्देश्य ऐसी शिक्षा प्रदान करना था जो ग्रामीण भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में निहित हो। इसमें उत्पादक कार्य के माध्यम से सीखने पर जोर दिया गया, जिसमें कृषि, बुनाई और अन्य शिल्प जैसे गतिविधियाँ शामिल थीं। बुनियादी शिक्षाका उद्देश्य केवल शैक्षणिक नहीं थे, बल्कि आत्मनिर्भरता, श्रमकी गरिमा और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों को स्थापित करने का भी लक्ष्य था।
- **पाठ्यक्रमऔरपद्धति**–बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम साक्षरता, गणित, व्यावसायिक कौशल और नैतिक शिक्षा जैसे विषयों को शामिल करता था। इसका उद्देश्य एक ऐसा संतुलित शिक्षा प्रदान करना था जो कि इसका उद्देश्य एक संतुलित शिक्षा प्रदान करना था जो छात्रों के दैनिक जीवन से संबंधित हो। इस पद्धति में व्यावहारिक गतिविधियों और अनुभव पर जोर दिया गया।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

- **प्रभावऔरविरासत**–बुनियादी शिक्षा के कार्यान्वयन को चुनौतियों का सामना करना पड़ा, इसने भारत में वैकल्पिक शैक्षिक मॉडल के लिए आधार तैयार किया। गांधी के विचारों से प्रेरित कई शैक्षिक संस्थान और कार्यक्रम विकसित हुए, जिसने व्यावसायिक शिक्षा के विकास और पारंपरिक कौशल को आधुनिक सीखने के साथ एकीकृत करने में योगदान दिया।

3,3. **गांधी की बुनियादी शिक्षा (नईतालीम)**– और समकालीन शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता गांधी के शैक्षिक दर्शन परशोध– समग्र शिक्षा पर गांधी का जोर–शोध का एक महत्वपूर्ण निकाय शिक्षा के बारे में गांधी के दृष्टिकोण को केवल अकादमिक नहीं बल्कि बौद्धिक, शारीरिक, नैतिक और भावनात्मक विकास को शामिल करते हुए समग्र विकास की प्रक्रिया के रूप में उजागर करता है।अनुराधा एस. (2011) के अनुसार, गांधी के मॉडलने व्यावहारिक , नैतिक और समुदाय की जरूरतों के लिए प्रासंगिक शिक्षा पर जोर दिया, जिसमें सीखने के उपकरण केरूपमेंशारीरिकश्रमपरविशेषध्यानदियागयाथा।

- **व्यावसायिक शिक्षारू नारायण** (2010) और कृष्णा (2006) जैसे विद्वानों ने उल्लेख किया है कि गांधी व्यावसायिक शिक्षाको व्यक्तियों और राष्ट्र की आत्मनिर्भरता के लिए आवश्य कमानते थे। अध्ययनों ने उल्लेख किया है कि गांधी की दृष्टि ने शिक्षा को उत्पादक कार्य से कैसे जोड़ा, यह सुनिश्चित करते हुए कि छात्र समाज की आवश्यकताओं के लिए सीधे लागू होने वाले कौशल हासिल करें,जिसका उद्देश्य आर्थिक और सामाजिक रूप से योगदान देने में सक्षम अच्छी तरह से विकसित व्यक्ति तैयार करना है।
- **कार्य औरअध्ययनका एकीकरणरू** सुंदरम (2015) जैसे विद्वानों ने उल्लेख किया है कि गांधी का सीखने पर जोर पारंपरिक रटने वाली शिक्षा प्रणाली की प्रतिक्रिया थी।यहअवधारणा गांधी के श्रम–आधारित शिक्षा के दृष्टिकोण से मे लखाती है,जिसका उद्देश्य बौद्धिक और शारीरिक कार्य के बीच असमानता को कम करना है।

3.4,**गांधी के शैक्षिक दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता –** गांधी के शैक्षिक दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता पर हुए शोध अध्ययनों ने पता लगाया है कि बेरोजगारी और कौशल अंतर जैसे आधुनिक समय के शैक्षिक मुद्दों को संबोधित करने में नई तालीम अत्यधिक प्रासंगिक है। अध्ययनों से पता चलता है कि व्यावसायिक शिक्षाका एकीकरण शैक्षणिक योग्यता और रोजगार के अवसरों के बीच की खाई को पाटने में मदद कर सकता है कुमार, 2018) ।सामाजिक आवश्यकताओं पर आधारित शिक्षा प्रणाली के लिए गांधी का आह्वान वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधारों के आह्वान में प्रतिध्वनि त हुआ है, जहाँ कौशल विकास को तेजी से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यद्यपि आधुनिक,तकनीकी रूप से संचालित दुनिया की माँगों के साथ पूरी तरह से संरेखितन होने के लिए गांधी के दर्शन की आलोचनाएँ हैं।शिक्षा में प्रौद्योगिकी की भूमिका विकसित हुई हैऔर पटेल (2020) द्वारा किए गए शोध का तर्क है कि गांधी का मॉडल, जो शारीरिक श्रम और सादगी पर आधारि तथा, 21 वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए तकनीकी साक्षरता को शामिल करने के लिए अनुकूलित करने की आवश्यकता हो सकती है।

4,**राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020**– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020एक समग्र ढांचा है जिसका उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बदलना है।यह गुणवत्ता शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच, समानता और समावेशन को बढ़ावा देने के साथ– साथ समग्र विकास को भी महत्व देती है।

- **प्रमुख विशेषताएँ–**
- **विद्यालय शिक्षा का पुनर्गठन**–एनईपी 2020 कई महत्वपूर्ण परिवर्तनों का प्रस्ताव करती है, जिसमें विद्यालय शिक्षा का पुनर्गठन5334 प्रारूप में पुनर्गठित करना शामिल है, जिसमें मौलिक, प्रारंभिक,मध्य

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

और माध्यमिक चरण शामिल हैं।यह माध्यमि कस्तर से व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण, बहु भाषा वाद को बढ़ावा देने और एकलचीले पाठ्यक्रम की वकालत करता है जो आलोचनात्मक सोच और अनुभव जन्य शिक्षा पर केंद्रित है।

- **प्रौद्योगिकी पर जोर**– नीति शिक्षा में प्रौद्योगि की के लाभ उठाने लिए डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देती है और शिक्षण और अधिगम प्रक्रियाओं में प्रौद्योगिकी के एकीकरण पर बलदेती है।यह शिक्षक प्रशिक्षण और प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोगको है।
- **उच्च शिक्षा सुधाररू एनईपी2020** उच्च शिक्षा में सुधार का प्रस्ताव करता है, जिसमें बहुविषयक विश्वविद्यालयों की स्थापना ,शोध और नवाचार को बढ़ावा देना, और सहयोग और साझेदारियों के माध्यम से उच्चशिक्षा का अंतरराष्ट्रीय करण शामिल है। भारत सरकार द्वारा स्वीकृत राष्ट्रीयशिक्षा नीति(एनईपी) 2020 का उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली में आमूल चूल परिवर्तन करना है।यह एकन्याय संगत, समावेशी और समग्र शिक्षा प्रणाली के लिए एक रूपरेखा प्रदान करना चाहता है।

4.1–एनईपी 2020 के प्रमुख सिद्धांतऔर सिफारिशें इस प्रकार हैं–

- **समग्र और बहुविषयक शिक्षा**–एनईपी 2020 लक्ष्य पर आधारित शिक्षा प्रदान करने के महत्व देता है जोरट ने से परे है और महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और समस्या–समाधान कौशल पर केंद्रित है।यह शैक्षणिक और पाठ्येतर शिक्षा के मिश्रण की वकालत करता है।एनईपी 2020 छात्रों के समग्र विकास पर भी ध्यान केंद्रित करता है,जो गांधी के समग्र शिक्षा पर जोर देने केसाथ संरेखित है। नीति संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास के एकीकरण पर जोर देती है,जो आलोचनात्मकसोच, रचनात्मकता और समस्या–समाधान कौशल को बढ़ावा देने के लिए रटने से आगे बढ़ती है।यह एक कठोर, एक–आयामी दृष्टिकोण से अधिक लचीले, बहु– विषय पाठ्यक्रम में परिवर्तन की सिफारिश करता है।
- **प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा** . ईसी सीई नीति प्रारंभिक बचपन शिक्षा और देखभाल के महत्व को पहचानते हुए बच्चे के भविष्य के विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।यह गांधी के प्रारंभिक बचपन को एक आधार भूत चरण के रूप में महत्व देने के साथ रेखित है।
- **व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण**–गांधी की तरह, एनईपी 2020 का उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षा को मुख्य धारा में एकीकृत करना है।इसमें कक्षा 6 से व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू करने और कौशल विकास सुनिश्चित करने के लिए उन्हें नियमित शैक्षणिक पाठ्यक्रम में एकीकृत करने का प्रस्ताव है। एनईपी 2020 व्यावसायिक शिक्षा को प्राथमिकता देता है, जिसमें कक्षा 6 से ही व्यावसायिक पाठ्य क्रम शुरू करने की आवश्यकता है।यह एक लचीले, बहु–विषय दृष्टिकोण को भी बढ़ावा देता है, जहाँ छात्र शैक्षणिक और व्यावसायिक धाराओं का चयन कर सकते हैं, जिस से उन्हें श्रम बाजार में मांग वाले कौशल हासिल करने में सक्षम बनाया जा सके।
- **मातृ भाषा शिक्षण का माध्यम**–एनईपी 2020 प्रारंभिक शिक्षा में शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषाया क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व को दोहराता है, जो गांधी के दृष्टिकोण के अनुरूप है।एनईपी 2020 प्राथमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषाया क्षेत्रीय भाषा के उपयोग की अवश्यकता ,गांधी के इस विश्वास को प्रतिध्वनि करता है कि भाषा संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।यह लचीले और बहु भाषी दृष्टिकोण के महत्व को अभिव्यक्त करती है ,जिससे छात्रों को यथा संभव लंबे समय तक अपनी मातृभाषा में सीखने की अनुमति मिलती है, लेकिन साथ ही अन्य भाषाओं के सीखने को भी बढ़ावा मिलता है। आलोचनात्मक सोचऔर रचनात्मकता पर ध्यान–नीति

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

रटने की आदत से हटकर सीखने के लिए अधिक रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच–आधारित दृष्टिकोण, जिसमें व्यावहारिक और बौद्धिक विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। समानताऔरसमावेश–एनईपी 2020 शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाने, जिसमें हाशिए पर पड़े समुदायों परविशेष ध्यान दिया जाता है,जो गांधी के सार्व भौमिक शिक्षा के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

- **शिक्षा में प्रौद्योगिकी–नीति** शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग महत्वपूर्ण है, जिससे सीखना अधिक सुलभ और आकर्षक हो सके। यद्यपि गांधी आधुनिक तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता को लेकर संशय में थे, लेकिन उनका मॉडल शिक्षा में सुधार के लिए उपयुक्त उपकरणों की क्षमता को सरलता और व्यावहारिकता के मूल सिद्धांतों के साथ रेखित होने पर महत्व देता है।

4ण.2–एनईपी 2020,शिक्षा के आधुनिकी करण के लिए एक दृष्टिकोण.–

एनईपी 2020 परशोध– समग्र विकास–एनईपी 2020पर शोधने समग्र, बहु–विषय शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए नीति की काफी प्रशंसा की है।राय 2020) के अनुसार, एनईपी का ढांचा शिक्षा में वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के साथ संरेखित है,जो गांधी के शिक्षा के व्यापक दृष्टिकोण के समान आलोचनात्मकसोच, रचनात्मकता और छात्रों की भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक भलाई को बढ़ावा देता है। एनईपी 2020 में समावेशिता का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों के लिए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करना है, यह लक्ष्य गांधी के सार्वभौमिक शिक्षा के लक्ष्य के समकक्ष है।

- **एनईपी 2020 में व्यावसायिक शिक्षा–ए**नईपी 2020 का एक प्रमुख पहलू व्यावसायिक शिक्षा को मुख्य धारा की स्कूली शिक्षा में एकीकृत करना है। सिंह (2021 द्वारा किए गए शोध में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि कैसे एनईपी 2020 गांधी द्वारा परिकल्पित व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली का अधिक संरचित और आधुनिक संस्करण को प्रस्तावित करता है। नीति गांधी के दृष्टिकोण के अनुरूप मध्यविद्यालय स्तर से व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू करने का प्रयास करती है, लेकिन अधिक संगठित पाठ्यक्रम और उद्योग की जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करती है।यह आधुनिक व्यावसायिक बाजार में कुशल श्रमिकों की मांग को संबोधित कर सकता है,जैसा कि वर्मा 2022, द्वारा किए गए शोध में बताया गया है। भाषा और समावेशिता–एनईपी 2020 में केंद्रीय विषयों में से एक बहुभाषावाद है, जिसमें प्रारम्भिक वर्षों में मातृभाषा आधारित शिक्षा पर महत्व दिया गया है। यह श्री निवासन 2021, द्वारा उजागर किए गए शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषा पर गांधी के जोर के अनुरूप है। शोध से पता चलता है कि शिक्षा में मातृभाषा का उपयोग संज्ञानात्मक विकास को बढ़ा सकता है और बेहतर सीखने के परिणामों को बढ़ावा दे सकता है,जो शिक्षा में भाषा के महत्व पर गांधी के विश्वासों का समर्थन करता है।

5–एनईपी 2020 के साथ गांधी की बुनियादी शिक्षा की तुलनाऔर निष्कर्ष –

- **समानता** – शिक्षा का दर्शन–गांधी और एनईपी 2020 दोनों ही समग्र विकास का समर्थन करते हैं,लेकिन जहाँ गांधी का मॉडल शारीरिक श्रम मानसिक, नैतिक विकास सामाजिक जिम्मेदारी, और आत्मनिर्भरता से जोड़ते हुए सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देता है, वहीं एनईपी2020 प्रौद्योगिकी, आलोचनात्मक सोच और बहु– विषयक शिक्षा को एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित करता है।एनईपी 2020 एक आधुनिक दृष्टिकोण लाता है, जो शिक्षा में वैश्विक रुझानों को अपनाता है जबकि स्थानीय संदर्भ पर भी ध्यान केंद्रित करता है।
- **लिंग समानता**– गांधी ने महिलाओं के शिक्षा के अधिकार पर विशेष ध्यान दिया था और एनईपी 2020 भी लिंग समानता को सुनिश्चित करने का प्रयास करती है। व्यावसायिक शिक्षा–काम और शिक्षाको एकीकृत करने का गांधी का विचार एनईपी 2020 में स्कूली शिक्षा के शुरु आतीचरणों से व्यावसायिक

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

प्रशिक्षण पर जोर देने में प्रतिध्वनित होता है। यद्यपि गांधी का दृष्टिकोण अधिक जमीनी स्तर का था,जबकि एनईपी 2020 अधिक बुनियादी ढांचे का प्रस्ताव करता है। गांधी और एनईपी दोनों ही शारीरिक ,मानसिक और भावनात्मक शिक्षा को एकीकृत करने की सिफारिश करते हैं, ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करते हैं जो संतुलित होते हैं और समाज में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम होते हैं।रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच पर एनईपी2020 का ध्यान बौद्धिक स्वतंत्रता पर गांधी के प्रोत्साहन को प्रतिध्वनि तकरता है। शिक्षा के एक रूप के रूप में मैनु अलश्रम पर गांधी का ध्यान एनईपी2020 के औपचारिक, शैक्षणिक ज्ञानऔर प्रौद्योगिकी–आधारित शिक्षा के साथ पूरी तरह से संरेखित नहीं हो सकता है, लेकिन समकालीन संदर्भ में, विशेष रूप से ग्रामीण और व्यावसायिक शिक्षा में इन्हें समेटने की गुंजाइश है। गांधी की नई तालीम और एनईपी 2020 दोनों ही व्यावसायिक शिक्षा को शैक्षिक ढांचे के अभिन्न अंग के रूप में बढ़ावा देने में संरेखित हैं। औपचारिक शिक्षा के साथ कौशल विकास को एकीकृत करने का एनईपी का लक्ष्य गांधी की एक ऐसी प्रणाली के दृष्टिकोण से दृढ़ता से मेल खाता है जो व्यावहारिक ज्ञान पर सिद्धांत को प्राथमिक तान हीं देती है। गांधी का व्यावसायिक शिक्षा मॉडल पारंपरिक शिल्प और शारीरिक श्रम पर आधारित था, जिसे अक्सर ग्रामीणआत्मनिर्भरता से जोड़ा जाता था ,जबकि एनईपी 2020 व्यावसायिक कौशल पर अधिक आधुनिक, प्रौद्योगिकी–संचालित दृष्टिकोण को शामिल करने का प्रयास करता है जो वैश्विक आर्थिक रुझानों का जवाब देता है।

- **मातृभाषा**– एनईपी 2020 प्राथमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा के उपयोग, जो गांधी के इस विश्वास को प्रतिध्वनित करता है कि भाषा संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह लचीले और बहु भाषी दृष्टिकोण, जिससे छात्रों को यथा संभव लंबे समय तक अपनी मातृभाषा में सीखने की अनुमति मिलती है,लेकिन साथ ही अन्य भाषाओं के सीखने को भी बढ़ावा मिलता है। गांधी का दृष्टिकोण और एनईपी दोनों ही शिक्षा की भाषा के रूप में मातृभाषा के महत्व पर सहमत हैं,यह इस समझ के साथ संरेखित है कि भाषा विचार, रचनात्मकता और समझ को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दोनों महात्मागांधी की मौलिक शिक्षा और एनईपी 2020 दोनों का एक सामान्य लक्ष्य भारतीय शिक्षा प्रणाली को इस तरह से बदलना है कि यह अधिक प्रासंगिक, समावेशी और समग्रहो। जब कि गांधी की मौलिक शिक्षा ने पारंपरिक कौशल को आधुनिकशिक्षा के साथ एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित किया, एनईपी2020 का लक्ष्य नीतिगत सुधारों, प्रौद्योगिकी एकीकरण और पाठ्यक्रम के पुनर्गठन के माध्यम से 21वीं सदी की चुनौतियों का समाधान करना है।महात्मा गांधी की ष्नई तालीमष और एनईपी 2020 के बीच कुछ समानताएँ भी हैं।

अंतर–

- **प्रौद्योगिकी का उपयोग** –जहां गांधी ने शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर ज्यादा जोर नहीं दिया था,वहीं एनईपी2020 में प्रौद्योगिकी के समावेश पर जोर दिया गया है।
- **आधुनिक दृष्टिकोण**–एनईपी 2020, 21वीं सदी की आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन की गई है, जो वैश्विक संदर्भ में भारतीय शिक्षा को प्रतिस्पर्धी बनाती है।

6. निष्कर्ष– अंततः,प्रस्तुत शोध पत्र के आधार पर यह निष्कर्ष निकालता है कि गांधी की बुनियादी शिक्षा और एनईपी 2020 दोनों ही शिक्षा को एक सशक्त और जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए एक केंद्रीय साधन मानते हैं।गांधी की दृष्टि के आधार पर एनईपी 2020 एक टिकाऊ, समावेशी और नैतिक समाज के निर्माण को एक नया दिशा देने में मदद कर सकती है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

7, संदर्भ–

1. अनुराधा, एस. (2011)। गांधी का शैक्षिक मॉडल: वैश्विक शिक्षा की ओर। भारत में शिक्षा, 19(2), 34–42
2. नाइकरण, आर. (2010)। औपचारिक शिक्षा और अहिंसावाद: गांधी के दृष्टिकोण का पुनर्मूल्यांकन। समाज और शिक्षा, 12(1), 23–30।
3. शर्मा, एल. (2006)। गांधी का दृष्टिकोण: शिक्षा और राष्ट्र निर्माण। शिक्षा नीति और समाज, 8(3), 45–52।
4. सुजान्य, ए. (2015)। गांधी का कर्म आधारित शैक्षिक दृष्टिकोण: पारंपरिक शिक्षा से शैक्षिक चिंतन। शिक्षा, 22(4), 15–22।
5. कुमार, विकास। (2018)। गांधी की शैक्षिक दृष्टि और समकालीन परिप्रेक्ष्य: समाज और शैक्षिक सुधार। 11(2), 67–74।
6. पटेल, एस. (2020)। गांधी के शैक्षिक दृष्टिकोण और 21वीं सदी की चुनौतियाँ। आधुनिक शिक्षा और विज्ञान, 6(3), 29–37।
7. राय, एस. (2020)। नई शिक्षा नीति 2020: वैश्विक और बहुविषयक शिक्षा की ओर एक कदम। शिक्षा और समाज, 15(3), 56–64।
8. सिंह, इ. (2021)। औपचारिक शिक्षा का विकास: एनईपी 2020 का गांधी के दृष्टिकोण से मूल्यांकन। औपचारिक शिक्षा और प्रशिक्षण जर्नल, 22(4), 78–86।
9. वर्मा, जे. (2022)। समय की माँग: एनईपी 2020 में औपचारिक शिक्षा और उद्योग की आवश्यकताएँ। आधुनिक शिक्षा और समाज, 10(2), 45–53।
10. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD)। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। भारत सरकार।
11. नई शिक्षा नीति 2020। (2020)। भारत में शिक्षा को बदलने का संकल्प (पृ. 6)।
12. नई शिक्षा नीति 2020। (2020)। शिक्षा के लिए वैश्विक दृष्टिकोण का संकल्प (पृ. 3)।